टिप्पणी

8

स्वरोज़गार

व्यवसाय की प्रकृति क्षेत्र, व्यवसाय व सहायक सेवाओं, व्यवसाय पर्यावरण, व्यवसाय की आधुनिक विधियों, व्यवसाय संगठनों के स्वरूपों आदि के बारे में जानने के बाद आप अपने जीविकोपार्जन के बारे में सोच रहे होंगे। यदि आप किसी संगठन में नौकरी स्वीकार करते हैं तब आपको अपने नियोक्ता की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न कार्य करने होंगे और वेतन स्वरूप आपको एक निश्चित राशि प्राप्त होगी। यदि आप नौकरी नहीं करना चाहते हैं तो अपने जीविकोपार्जन हेतु अपना स्वयं का व्यवसाय भी कर सकते हैं। आप एक छोटी फुटकर दुकान, दर्जी की दुकान, रेस्टोरेन्ट, हलवाई की दुकान, बिस्किट एवं ब्रेड की दुकान, ब्यूटी सेलून, आदि अपने स्थानीय बाजार में चला सकते हैं। दूसरे शब्दों में, आप छोटे पैमाने पर विनिर्माणक एवं क्रय विक्रय का कार्य कर सकते हैं या मूल्य के बदले कुछ सेवाएं भी दे सकते हैं। इस प्रकार की आर्थिक क्रियायें स्वरोज़गार कहलाती हैं। इस पाठ में हम जीवन–वृति के रूप में स्वरोज़गार के विषय में और जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- स्वरोज़गार शब्द को परिभाषित कर सकेंगे;
- स्वरोज़गार की विशेषताओं को पहचान सकेंगे;
- स्वरोज़गार के महत्व को समझा सकेंगे;
- स्वरोज़गार के विभिन्न क्षेत्रों की गणना कर सकेंगे;
- छोटे व्यवसाय का अर्थ व लक्षणों को समझा सकेंगे;
- छोटे व्यवसाय के विभिन्न प्रकारों की पहचान कर सकेंगे;

टिप्पणी

- भारत में छोटे व्यवसाय के क्षेत्र एवं महत्व का वर्णन कर सकेंगे;
- छोटे व्यवसाय की उन्नति के लिए सरकारी नीतियों का उल्लेख कर सकेंगे; और
- भारत में छोटे व्यवसाय को विभिन्न संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली सहायता की व्याख्या कर सकेंगे।

8.1 स्वरोज़गार का अर्थ

आप जानते हैं कि जीवन के लिए धनोपार्जन आवश्यक है। आपके पिताजी, माताजी, भाई, बहिनें और अन्य लोग विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में व्यस्त होंगे जिससे वे अपना जीवन निर्वाह करते हैं। क्या आपने कभी उनकी क्रियाओं को ध्यानपूर्वक देखा है? वास्तव में वे क्या करते हैं? सम्भवतः उनमें से कुछ कारखानों, दुकानों, खेतों, आदि में दूसरों के लिए कार्य कर रहे होंगे एवं उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के फलस्वरूप अपने नियोक्ता से निश्चित राशि प्राप्त करते होंगे। ये लोग एक आर्थिक क्रिया में लगे हुए हैं जिसे वृत्ति–रोज़गार या वैतनिक रोज़गार कहते हैं। लेकिन अनेक ऐसे लोग हैं जो एक पेशे या किसी व्यवसाय को स्वयं आरम्भ कर उसका प्रबंध भी करते हैं। वे तन–मन से पूरा प्रयास करते हैं और सफलतापूर्वक जीवन वृति चलाने के लिए सभी प्रकार के जोखिमों को उठाते हैं। अपने कार्य से प्राप्त समस्त आमदनी (उपार्जित लाभ) पर उनका अधिकार होता है। हम सभी ने छोटी–सी किराने की दुकान, दर्जी की दुकान, दवाई की दुकान, आदि को अपने आसपास देखा है। ये एक व्यक्ति के स्वामित्व एवं प्रबंध में होती हैं। वह व्यक्ति इसमें कुछ सहायकों की सहायता ले भी सकता है और नहीं भी। इन्हीं आर्थिक क्रियाओं को स्वरोज़गार कहा जाता है। अतः जब एक व्यक्ति किसी आर्थिक क्रिया को करता है जिस का वह स्वयं स्वामी व प्रबंधक हो, तो इसे स्वरोज़गार कहते हैं।

उपरोक्त विवरण से हम स्वरोज़गार की विशेषताओं की समीक्षा कर सकते हैं।

8.2 स्वरोज़गार की विशेषताएं

1. स्वरोज़गार में व्यक्ति अपने द्वारा स्वयं के लिए कार्य करके जीविका कमाता है।
2. इसमें स्वामित्व एवं प्रबंध क्रियाएं एक ही व्यक्ति द्वारा की जाती हैं। आवश्यकता पड़ने पर वह एक या दो व्यक्तियों को सहायक के रूप में रख लेता है। इस प्रकार स्वरोज़गार अन्य लोगों को भी रोज़गार देता है।
3. स्वरोज़गार में आय निश्चित नहीं होती। यह वस्तुओं के उत्पादन, क्रय–विक्रय या फिर मूल्य के बदले दूसरों को सेवाएँ प्रदान करने से प्राप्त आय पर निर्भर करती हैं।
4. स्वरोज़गार में स्वामी लाभ स्वयं लेता है और हानि का जोखिम भी स्वयं ही उठाता है। इस प्रकार स्वरोज़गार में प्रयत्न एवं पारितोषिक में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।
5. स्वरोज़गार के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है चाहे यह छोटी मात्रा में ही हो।

टिप्पणी

6. स्वरोज़गार में व्यक्ति, व्यवसाय को सफलतापूर्वक चलाने एवं व्यवसाय के विस्तार के लिए मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाने का निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है। इसमें व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार कानूनों की परिधि में कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता है।

अब स्वरोज़गार को इस प्रकार पारिभाषित किया जा सकता है: स्वरोज़गार व्यक्ति की उस आर्थिक क्रिया को कहते हैं जिसे वह स्वयं लाभोत्पादक कार्य के रूप में करता है। इसके अन्तर्गत वस्तुओं का उत्पादन कर बेचना, वस्तुओं का क्रय–विक्रय या फिर मूल्य के बदले में सेवाएं प्रदान करना आता है।

8.3 स्वरोज़गार का महत्त्व

जीवनवृत्ति जीविकोपार्जन का एक तरीका है। स्वरोज़गार भी जीवनवृत्ति है क्योंकि कोई भी व्यक्ति व्यवसाय या सेवा कार्यों से अपनी जीविका कमा सकता है।

बेरोज़गारी में वृद्धि तथा नौकरियों के पर्याप्त अवसर न मिलने के कारण स्वरोज़गार का महत्त्व अधिक हो गया है। स्वरोज़गार के महत्त्व के अंतर्गत निम्नलिखित बातें गिनी जा सकती हैं।

1. **छोटे व्यवसाय के लाभ :** बड़े व्यवसायों की तुलना में छोटे व्यवसाय के अनेक लाभ हैं। इसे छोटी पूँजी के निवेश से प्रारम्भ किया जा सकता है तथा इसको प्रारम्भ करना सरल भी है। छोटे पैमाने की क्रियाओं का स्वरोजगार बड़े पैमाने के व्यवसाय का अच्छा विकल्प है जिसमें वातावरण प्रदूषण, गंदी बस्तियों का विकास, कर्मचारियों के शोषण जैसी कई बुराइयां आ गई हैं।

2. **नौकरी के स्थान पर प्राथमिकता :** नौकरी में आय सीमित होती है जबकि स्वरोज़गार में इसकी कोई सीमा नहीं है। स्वरोज़गार में व्यक्ति अपनी प्रतिभा का अपने लाभ के लिए प्रयोग कर सकता है। वह निर्णय जल्दी एवं सरलता से ले सकता है। ये वे ठोस प्रेरक तत्व हैं जिनके कारण कोई भी व्यक्ति नौकरी के स्थान पर स्वरोज़गार को प्राथमिकता देगा।

3. **उद्यमिता की भावना का विकास :** उद्यमिता जोखिम उठाने का दूसरा नाम है क्योंकि उद्यमी नए उत्पाद तथा उत्पादन तथा विपणन की नई पद्धति खोजता है। जबकि स्वरोज़गार में या तो कम अथवा कोई जोखिम नहीं होता। लेकिन जैसे ही स्वरोज़गार में लगा व्यक्ति कुछ नया सोचता है तथा अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए कदम उठाता है तब वह उद्यमी बन जाता है। इस प्रकार स्वरोज़गार उद्यमिता के लिए अवतरण मंच बन जाता है।

4. **व्यक्तिगत सेवाओं का प्रवर्तन :** स्वरोज़गार में व्यक्तिगत सेवाएं जैसे दर्जी का काम, कारीगरी, दवाओं की बिक्री, आदि कार्य भी सम्मिलित हैं। ये सेवाएं उपभोक्ता सन्तुष्टि में सहायक होती हैं। इन्हें व्यक्ति आसानी से शुरू कर निरंतर चला सकता है।

टिप्पणी

5. **सृजनता का अवसर :** स्वरोज़गार में कला एवं कारीगरी में सृजनात्मकता तथा कलात्मकता के विकास का अवसर मिलता है जो भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए हस्तकला, हस्तशिल्प, इत्यादि में हम सृजनात्मक विचारों का स्पष्ट झलक देख सकते हैं।

6. **बेरोज़गारी की समस्या में कमी :** स्वरोज़गार उन लोगों को लाभप्रद कार्य के अवसर प्रदान करता है जो अन्यथा बेरोज़गार रहते हैं। इस प्रकार यह बेरोजगारी की समस्या का समाधान करता है।

7. **उच्चशिक्षा की सुविधाओं से वंचित लोगों के लिए वरदान :** अनेक कारणों से 10+2 की शिक्षा के पश्चात कई विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। ऐसे लोग अपना धंधा स्वयं प्रारम्भ कर सकते हैं। इनमें ऊंची शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है।

सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों में स्वरोज़गार को प्राथमिकता दी गई है। उद्यमिता एवं स्वरोज़गार को बढ़ावा देने के लिए पूरे देश में अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. 'स्वरोज़गार' को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।

2. निम्नलिखित उदाहरणों में कौन–कौन से स्वरोज़गार को दर्शाते हैं? दिए गए बाक्स में (√) निशान लगाएं यदि आपका उत्तर 'हां' है।

   (i) कारखाने में कार्यरत मजदूर।

   (ii) स्टेशनरी की दुकान चलाने वाला व्यक्ति।

   (iii) बैंक में मैनेजर के पद पर आसीन व्यक्ति।

   (iv) दवाइयों की दुकान चलाने वाला व्यक्ति।

8.4 स्वरोज़गार के अवसर

स्वरोज़गार के महत्व को पढ़ने के पश्चात आप अपना उद्यम, चाहे वह छोटे पैमाने का ही हो, प्रारम्भ करने के लिए प्रेरित होंगे। लेकिन वे कौन–से क्षेत्र होंगे जिनमें आप अपने उद्यम को सफलतापूर्वक चला सकेंगे? स्वरोज़गार में उपयुक्त जीवनवृति चुनने से पहले आपका स्वरोज़गार में उपलब्ध अवसरों के विषय में कुछ ज्ञान अवश्य होना चाहिए। अब हम स्वरोज़गार के अवसरों को मुख्य क्षेत्रों में निम्न रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं।

1. व्यापार करना;
2. विनिर्माण करना;
3. पेशेवर कार्य; एवं
4. वैयक्तिक सेवाएं

टिप्पणी

आइए, अब इन सभी के बारे में चर्चा करें।

1. **व्यापार करना :** जैसा आप जानते हैं कि व्यापार में वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय–विक्रय सम्मिलित है। कोई भी व्यक्ति छोटी राशि से एक छोटी व्यापारिक इकाई शुरू कर सकता है। आप अपने आस–पास किरयाने या स्टेशनरी की छोटी सी दुकान शुरू करने की सोच सकते हैं। यदि आप में अधिक पूँजी निवेश करने एवं जोखिम उठाने की सामर्थ्य है तब आपके लिए थोक व्यापार एक अच्छा विकल्प है। व्यक्ति कोई एजेन्सी ले सकता है या फिर स्टाकिस्ट भी बन सकता है। 'अचल सम्पत्ति व्यवसाय' जो आजकल फलफूल रहा है, एक लुभावना विकल्प हो सकता है।

2. **विनिर्माण करना :** कोई भी व्यक्ति ईंट का विनिर्माण या बेकरी (ब्रेड, विस्किट) एवं कन्फैक्शनरी का सामान उत्पादन करने का छोटा उद्योग लगा सकता है। इन सभी व्यवसायों के लिए कम पूँजी एवं सरल उपकरणों की आवश्यकता होती है। कृषि ऐसा अन्य क्षेत्र है जिसमें केवल अकेला व्यक्ति अथवा अन्य एक दो व्यक्तियों की सहायता लेकर समस्त कार्य कर सकता है। यह स्वरोज़गार का सदियों पुराना क्षेत्र है। बागान (फल उत्पादन), डेरी, मुर्गी पालन, कृषि, मत्स्य पालन, बागवानी, आदि स्वरोज़गार के अवसरों के कुछ उदाहरण हैं।

3. **पेशेवर कार्य :** पेशे, जिनमें विशेष ज्ञान एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, भी स्वरोज़गार के अवसर प्रदान करते हैं। वकील, डाक्टर, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, आर्कीटेक्ट एवं पत्रकार इस वर्ग में आते हैं। इन पेशों में विशिष्ट ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और इन वर्गों के लोगों को इनके संघ द्वारा बनाई गई आचरण–संहिता का अनुपालन करना होता है।

4. **वैयक्तिक सेवाएं :** वस्त्र सिलने (टेलरिंग), कार मरम्मत, बाल काटने, वस्त्र डिजाइन करने, घर की आन्तरिक साज–सज्जा, आदि कुछ ऐसी व्यावसायिक क्रियाएं है जिनमें उपभोक्ता को वैयक्तिक सेवाएं प्रदान करनी होती हैं। इन्हें व्यक्ति द्वारा आसानी से शुरू किया व चलाया जा सकता है। ये क्रियाएं उस व्यक्ति के निजी कौशल पर निर्भर होती हैं। लुहार, बढ़ई, सुनार सभी स्वरोज़गारी व्यक्ति हैं।

स्वरोज़गार में जीवन–वृत्ति के लिए आप अपनी रूचि का क्षेत्र चुनिये। यदि आप अपना स्वयं का छोटा व्यवसाय शुरू करने का निर्णय लेते हैं तब आपको जिस व्यवसाय को आपने चुना है उसके बारे में पूर्ण ज्ञान तथा देश में छोटे व्यवसाय के महत्व एवं उसकी संभावनाओं की जानकारी होनी चाहिए। इसके प्रवर्धन में संस्थाओं की सहायता एवं सरकारी नीति की जानकारी भी होनी चाहिए। अगले अनुभाग में आप छोटे व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से जानेंगे।

टिप्पणी

8.5 छोटे व्यवसाय का अर्थ

जब आपसे कोई पूछता है है ''छोटा व्यवसाय क्या है,'' तब आप कहेंगे कि वह व्यवसाय

- जो आकार में छोटा है,
- जिसमें कम पूँजी निवेश की आवश्यकता है,
- जो कम संख्या में कर्मचारियों की नियुक्ति करता है,
- जिसमें उत्पाद की मात्रा या मूल्य कम है, उसे छोटा व्यवसाय कह सकते हैं।

हां! आप ठीक हैं। व्यावसायिक उपक्रम को मापने के लिए उसका आकार, पूँजी निवेश, कर्मचारियों की संख्या, उत्पाद की मात्रा एवं उसका मूल्य, आदि सामान्य मापदण्ड हैं। हम छोटे व्यवसाय को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं– ''ऐसा व्यवसाय जो इसके स्वामियों द्वारा सक्रिय रूप से प्रबन्धित हो, स्थानीय क्षेत्र में क्रियाएं करता हो एवं आकार में छोटा हो''। भारत सरकार लघु (छोटी) औद्योगिक इकाई को परिभाषित करने के लिए प्लांट एवं मशीनरी में निवेश की गई स्थायी पूँजी को एक मात्र आधार मानती है। 1958 तक एक औद्योगिक इकाई, जिसमें 5 लाख रूपये से कम का स्थाई पूँजी निवेश था एवं विद्युत शक्ति का प्रयोग करने पर कर्मचारियों की संख्या 50 तक एवं विद्युत शक्ति का प्रयोग न करने पर कर्मचारियों की संख्या 100 तक हो उसी को छोटा व्यवसाय कहा जाता था। सरकार द्वारा समय–समय पर इस सीमा में परिवर्तन किया गया। सन् 1960 में कर्मचारियों की संख्या को आधार के रूप में निकाल दिया गया। 21 दिसम्बर 1999 से नवीनतम परिवर्तनों के अनुसार छोटे पैमाने की इकाइयों के लिए प्लांट एवं मशीनरी में निवेश सीमा बढ़ाकर एक करोड़ रुपये कर दी गई है। प्लांट अथवा मशीनरी स्वामित्व, पट्टे एवं किराया–क्रय के आधार पर क्रय की गई हो सकती है। एक करोड़ रुपये की सीमा के लिए शर्त यह है कि इकाई किसी अन्य औद्योगिक उपक्रम के स्वामित्व, नियंत्रण अथवा उसकी सहायक इकाई नहीं हो।

8.6 छोटे व्यवसाय की विशेषताएं

उपरोक्त चर्चा से हम अब छोटे व्यवसाय की मुख्य विशेषताओं की पहचान इस प्रकार कर सकते हैं:

(i) सामान्यतः एक छोटा व्यवसाय कुछ व्यक्तियों के स्वामित्व एवं प्रबंध में होता है।

(ii) व्यवसाय की दिन–प्रतिदिन की क्रियाओं में स्वामी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

(iii) स्वामियों के प्रबंध में भाग लेने से शीघ्र निर्णय लेने में सहायता मिलती है।

(iv) छोटे व्यवसाय का कार्यक्षेत्र सीमित होता है। साधारणतः इससे स्थानीय लोगों की आवश्यकता की ही पूर्ति होती है।

टिप्पणी

(v) साधारणतः छोटी व्यावसायिक इकाइयाँ श्रम आधारित होती हैं, अतः इनमें कम पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है।

(vi) इनमें सामान्यतः अपने कार्यों के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया जाता है। छोटे पैमाने की विनिर्माणक इकाइयाँ कच्चा माल, श्रमिकों, आदि के स्रोतों के निकट स्थापित की जाती हैं।

(vii) जेस्टेशन अवधि (वह अवधि जिसमें निवेश पर लाभ की प्राप्ति की व्यवसाय प्रतीक्षा करता है) कम होती है।

(viii) छोटे व्यवसाय का परिचालन लोचपूर्ण होता है। यह सरलता से अपनी प्रकृति, कार्य–क्षेत्र, उत्पादन प्रक्रिया, आदि में सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तनों के अनुसार बदलाव ला सकता है।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. अपने शब्दों में छोटे व्यवसाय के अर्थ का उल्लेख कीजिए। अपना उत्तर अधिकतम 30 शब्दों में दीजिए।

2. दिए गए निम्नलिखित कथनों में से स्वरोज़गार के अवसर को पहचान कर उनके सम्मुख दिए गए बक्से में लिखिए।

(क) समनान एक किसान है जिसके पास चार एकड़ भूमि है। अपने खेतों व बागानों की देखभाल के लिए उसने तीन व्यक्तियों को नौकरी पर रखा हुआ है। ☐

(ख) रंजीत शहर के केन्द्रीय बाजार में एक छोटा विभागीय भंडार चलाता है। ☐

(ग) गोपाल की मां एक डाक्टर हैं जो अपना क्लीनिक (दवाखाना) चलाती है। ☐

(घ) करन के पिता आर्डर लेकर फर्नीचर बनाते हैं। ☐

(ङ) हरी सोने की चैन एवं अन्य आभूषणों की मरम्मत करता है। ☐

8.7 छोटे व्यवसाय के प्रकार

भारत में छोटे व्यवसाय के विभिन्न प्रकार मिलते हैं। उनको प्लांट एवं मशीनरी में स्थायी पूँजी के निवेश के आधार अथवा प्रकृति या परिचालन के स्थान के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। छोटे व्यवसाय के कुछ मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

टिप्पणी

(क) छोटे पैमाने के उद्योग (ख) अति छोटे (नन्हें) उद्योग

(ग) सहायक औद्योगिक उपक्रम (घ) ग्रामीण उद्योग

(ङ) कुटीर उद्योग (च) सूक्ष्म व्यावसायिक उपक्रम

(छ) छोटे पैमाने की सेवाएं और व्यवसाय (उद्योग से सम्बन्धित)

(ज) व्यापारिक इकाईयाँ

आइए, इन छोटे व्यवसायों पर संक्षेप में विचार करें।

(क) छोटे पैमाने के उद्योग : एक छोटे पैमाने की औद्योगिक इकाई वह है जिसमें प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित स्थायी पूँजी एक करोड़ रुपये से अधिक नहीं है। कई निर्यात प्रवर्तन इकाइयों के लिए इस निवेश की सीमा को 5 करोड़ रुपये तक बढ़ा दिया गया है।

(ख) अति छोटे (नन्हें) उद्योग : एक व्यावसायिक इकाई जिसकी प्लांट एवं मशीनरी में कुल निवेशित स्थायी पूँजी 25 लाख रुपये से अधिक नहीं हैं, अति छोटा उद्योग कहलाती है।

(ग) सहायक औद्योगिक उपक्रम : जब एक छोटे पैमाने का उद्योग अपने उत्पादन के कम से कम 50% भाग की दूसरे उद्योग को आपूर्ति करता है तब इसे सहायक औद्योगिक उपक्रम कहते हैं। स्थायी पूँजी में एक करोड़ रुपये की निवेश सीमा इस पर भी लागू होती है। यदि एक सहायक इकाई का स्वामित्व अन्य व्यावसायिक इकाई के पास चला जाता है तब उसकी छोटे व्यवसाय की प्रास्थिति समाप्त हो जाती है।

(घ) ग्रामीण उद्योग : ऐसी इकाई को, जो ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है एवं जिसकी प्लांट एवं मशीनरी निवेशित स्थायी पूँजी 50,000 रु. प्रति कारीगर या प्रति कर्मचारी से अधिक नहीं है, ग्रामीण उद्योग कहते हैं।

(ङ) कुटीर उद्योग : ये वे छोटी विनिर्माणक इकाइयाँ हैं जो साधारण उत्पाद बनाती हैं और जिनमें कुछ विशिष्ठ कला या कौशल की आवश्यकता होती है जैसे हस्तशिल्प या सोने चांदी के तार का काम आदि तथा जो स्वदेशी तकनीक के साथ सादे उपकरणों का प्रयोग करती हैं। कुटीर उद्योग में समस्त या कुछ कार्य परिवार के सदस्यों की सहायता से, पूरे समय या अंशकालिक तौर पर, किया जाता है। इन इकाइयों को पूँजी निवेश की सीमा द्वारा परिभाषित नहीं किया गया है।

(च) सूक्ष्म (माइक्रो) व्यावसायिक उपक्रम : इन उपक्रमों में प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित स्थायी पूँजी एक लाख रूपये से अधिक नहीं होती है।

(छ) छोटे पैमाने की सेवाएं एवं व्यवसाय (उद्योग से सम्बधित) उद्यम : इस (एसएसएसबीई) प्रकार के व्यवसाय में प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित अधिकतम सीमा

10 लाख रुपये है। इस वर्ग में सम्मिलित मुख्य व्यावसायिक उद्यम हैं: विज्ञापन एंजेसियां, विपणन सलाहकारी फर्म, टाइप केन्द्र, फोटो कापी केन्द्र (जेरोक्सिंग), औद्योगिक परीक्षण (जांच) प्रयोगशाला, ऑटो मरम्मत केन्द्र, धुलाई एवं ड्राईक्लीनिंग, वस्त्रसिलाई, एस.टी.डी./आई.एस.डी. केन्द्र, सौंदर्य निखार पार्लर (ब्यूटी पार्लर), क्रेच, आदि।

(ज) **व्यापारिक इकाइयाँ :** विपणन स्थानों पर पाये जाने वाले छोटे फुटकर व्यापारी इस वर्ग में सम्मिलित हैं।

8.8 भारतवर्ष में छोटे व्यवसाय का महत्व

छोटे व्यवसाय का अर्थ, विशेषताओं एवं विभिन्न प्रकारों पर चर्चा करने के बाद, आइए, अब हम इसके महत्व को देखें। छोटे व्यावसायिक उद्यम प्रत्येक स्थान पर मिलते हैं। देश के किसी भी सामाजिक व आर्थिक विकास में इनकी विशेष भूमिका होती है। पूँजी संसाधन की कमी एवं प्रचुर मात्रा में श्रम एवं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता को दृष्टि में रखते हुए भारत के आर्थिक नियोजन में छोटे पैमाने के व्यवसायों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतवर्ष में छोटे पैमाने के व्यवसायों की, विनिर्माण क्षेत्र के कुल उत्पादन के सकल मूल्य के 35%, कुल औद्योगिक रोज़गार के 80% एवं कुल निर्यात के करीब 45%, भागीदारी है। इन योगदानों के अतिरिक्त निम्न कारकों के कारण छोटे पैमाने के उद्योगों का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

1. छोटे व्यावसायिक उद्यम हमारे देश में बड़ी मात्रा में रोज़गार के अवसर उत्पन्न करते हैं।
2. इनमें बड़े पैमाने के व्यावसायिक उद्यमों की तुलना में कम पूँजी की आवश्यकता होती है।
3. स्थानीय संसाधनों के उपयोग एवं स्थापित करने व चलाने में कम व्यय के कारण उत्पादन लागत कम आती है।
4. छोटे उद्योग, देश के अभी तक उपयोग में न लाये गए संसाधनों को प्रभावी रूप से उपयोग योग्य बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। स्थानीय संसाधनों एवं देशी तकनीक की सहायता से ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग, विश्व स्तर के उत्पाद उत्पादित कर सकते हैं।
5. छोटे उद्योग देश के संतुलित क्षेत्रीय विकास का प्रवर्तन करते हैं। ये संसाधनों के स्रोतों के पास आसानी से स्थापित किए जा सकते हैं जिससे उस स्थान का सर्वांगीण आर्थिक विकास होता है।
6. छोटे उद्योग विदेशों को गुणवत्ता वाले उत्पाद के निर्यात द्वारा राष्ट्रीय छवि को सुधारने में मदद करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय हस्तशिल्प, हथकरघा उत्पादों, जरी, आदि कार्यों की बहुत अधिक मांग है।

टिप्पणी

7. छोटे व्यवसाय लोगों के रहन–सहन के स्तर को सुधारने में सहायता करते हैं। लोग आसानी से अपना व्यावसायिक उद्यम प्रारंभ कर सकते हैं अथवा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। उनको विभिन्न प्रकार के गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्रतिदिन के उपयोग और उपभोग के लिए मिलते हैं।

8.9 छोटे व्यवसाय का क्षेत्र

छोटे व्यवसाय का क्षेत्र विस्तृत है जिसके अन्तर्गत विनिर्माण से लेकर फुटकर व्यापार तक विभिन्न क्रियायें आती हैं। कुछ विशिष्ट क्षेत्रों की आर्थिक क्रियाओं को छोटे व्यावसायिक उपक्रमों में गठित कर सफलतापूर्वक प्रबंधित किया जा सकता है। अब हम छोटे व्यवसाय के क्षेत्र के बारे में चर्चा करेंगे।

1. व्यापार को जिसमें माल एवं सेवाओं का क्रय–विक्रय शामिल है, शुरू करने में कम समय व पूँजी लगानी पड़ती है। आर्थिक क्रियाओं के इस क्षेत्र पर छोटे पैमाने के उद्यमियों का प्रभुत्व है।
2. मोटर मरम्मत, वस्त्र सिलाई, बढ़ईगीरी, सौंदर्य निखार (पार्लर), आदि जैसे कार्य जिनमें व्यक्ति विशेष की सेवाओं की आवश्यकता होती है छोटे व्यवसाय को स्थापित कर चलाए जाते है।
3. उन लोगों के लिए यह श्रेष्ठ विकल्प है जो नौकरी नहीं करना चाहते हैं लेकिन स्वरोजगारी बन जाते हैं। अपने स्वयं का छोटा व्यवसाय चलाने वाले लोग स्वतंत्रता पूर्वक कार्य कर सकते हैं।
4. छोटे पैमाने का व्यवसाय उन उत्पादों एवं सेवाओं के लिए जिनकी मांग कम या सीमित है अथवा विशेष क्षेत्र में है, सबसे उपयुक्त हैं।
5. एक बड़ी औद्योगिक इकाई छोटी इकाई की सहायता के बिना सरलतापूर्वक नहीं चल सकती है। ये औद्योगिक इकाइयाँ अक्सर मशीन के कुछ हिस्से या पुर्जों के उत्पादन के लिए, जो उनके लिए लाभप्रद नहीं होता, छोटी इकाई (सहायक औद्योगिक व्यवसाय) पर निर्भर होती है।
6. व्यवसाय का बाह्यस्रोतिकरण प्रक्रिया के युग में छोटे व्यावसायिक उद्योगों के लिए नये क्षेत्र खुल गए हैं।
7. ऐसे व्यावसायिक उपक्रम को जिन में ग्राहकों एवं कर्मचारियों से निजी सम्पर्क की आवश्यकता होती है छोटे व्यवसाय के रूप में सफलता पूर्वक चलाया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. आर्थिक क्रियाओं के किन्हीं दो विशिष्ट क्षेत्रों के नाम दीजिए जिनको छोटे व्यावसायिक उद्यमों द्वारा प्रभावी ढंग से चलाया जा सकता है।

टिप्पणी

2. छोटे पैमाने के उद्योग के प्रकार को उनकी प्लांट एवं मशीन में निवेशित स्थायी पूँजी के आधार पर पहचानिए। अपना उत्तर प्रत्येक कथन के सामने दिए बॉक्स में लिखिए।

   (क) प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित स्थाई पूँजी की राशि 25 लाख रुपये से अधिक नहीं होती है।

   (ख) प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित स्थाई पूँजी की कुल राशि एक लाख रुपये से अधिक नहीं होती है।

   (ग) प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित स्थायी पूँजी की कुल राशि 25 लाख रुपये से अधिक एवं 1 करोड़ रुपये से कम होती है।

   (घ) प्लांट एवं मशीनरी निवेशित स्थायी पूँजी की कुल राशि दस लाख रुपये से अधिक नहीं होती है।

   (ङ) प्लांट एवं मशीनरी में निवेशित स्थायी पूँजी की कुल राशि 50,000 रुपये प्रति कारीगर से अधिक नहीं होती है।

8.10 छोटे व्यवसायों के प्रति सरकारी नीति

भारत सरकार ने छोटे व्यावसायिक उद्यमों को उनकी देश के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के विकास में गहन क्षमता के कारण विशेष महत्व दिया है। आर्थिक स्थिति में परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए समय–समय पर उनके लिए सहायता की घोषणा की जाती हैं। भारत में छोटे व्यवसायों के विकास के लिए सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं, जो निम्नलिखित हैं:

1. छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए उदार साख नीति, जैसे ऋण एवं अग्रिमों की प्रक्रिया में कम औपचारिकताएं, रियायती दर पर ऋण, आदि तैयार की गई हैं।
2. बड़े पैमाने के उद्योगों को प्रतिस्पर्धा से दूर रखने के लिए भारतीय सरकार ने केवल छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए लगभग 800 वस्तुओं का उत्पादन सुरक्षित रखा है।
3. छोटे पैमाने की इकाईयों को आबकारी एवं बिक्री कर में छूट दी है अथवा कर मुक्त कर दिया गया है। छोटे पैमाने के उद्योगों के आबकारी कर में कर–मुक्ति की सीमा 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1 करोड़ रुपये कर दी गई है।
4. सरकार अपने उपयोग एवं उपभोग के लिए स्टेशनरी एवं दूसरे सामान क्रय करने में छोटे उद्योगों के उत्पादों को वरीयता प्रदान करती है।
5. सरकार द्वारा छोटे पैमाने के औद्योगिक व्यवसायों के प्रवर्तन, वित्तीयन एवं विकास के लिए भारतीय लघु औद्योगिक विकास बैंक (SIDBI), राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) एवं जिला औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना की है।
6. भारतीय सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए पृथक मंत्रालय की स्थापना की है जिससे देश में छोटे व्यावसायिक उद्यमों के विकास के लिए प्रभावशाली नियोजन और निगरानी हो सके।

टिप्पणी

7. सरकार ने बड़ी संख्या में उद्योगों को अपने नियोजन एवं नीतियों से लाभ पहुंचाने के लिए उनमें निवेश की राशि 3 करोड़ रुपया से घटाकर 1 करोड़ रुपया कर दी है।
8. सरकार छोटे पैमाने के व्यवसाय के चुने हुए क्षेत्रों को प्रौद्योगिकी में निवेशित पूँजी पर 12% का परिदान (Subsidy) देती है।
9. सरकार 'कुल गुणवत्ता प्रबन्धन' (TQM) को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक ऐसी इकाई को, जिसने आई.एस.ओ 9000 प्रमाणन प्राप्त कर लिया है, 75000 रुपये का अनुदान देती है।
10. हथकरघा क्षेत्र को वित्त, डिजायन एवं विपणन में सहायता के लिए सरकार ने दीनदयाल हथकरघा प्रोत्साहन योजना आरम्भ की है।
11. भारत सरकार ने छोटे पैमाने के इकाई की कुल अंशस्वामित्व के 24% भाग पर अन्य औद्योगिक इकाईयों के स्वामित्व की स्वीकृति दी है।
12. छोटे व्यावसायिक उद्यम के लिए सरकार भूमि, ऊर्जा एवं पानी रियायती दर पर उपलब्ध कराती है।
13. ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में छोटे उद्यम स्थापित करने पर विशेष प्रोत्साहन दिए जाते हैं।
14. सरकार विकसित भूमि एवं औद्योगिक भूसम्पत्ति प्रदान कर छोटे पैमाने के उद्योगों को स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है।

8.11 छोटे व्यवसायों को संस्थागत सहायता

व्यावसायिक उद्यम को शुरू करने व चलाने के लिए विभिन्न संसाधनों व सुविधाओं की आवश्यकता होती है। ये सहायता तकनीकी, वित्तीय, विपणन या प्रशिक्षण के रूप में हो सकती है। सरकार इस प्रकार की सहायता प्रदान करके विभिन्न संस्थानों या संगठनों को समय समय पर स्थापित करती है। अब हम कुछ ऐसे संस्थानों एवं सहायता प्रदान करने में उनकी भूमिका के विषय में पढ़ेंगे।

1. **राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड (NSIC) :** राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड की स्थापना सन् 1955 में भारत लघु उद्योगों के प्रवर्तन, सहायता एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए की गई। यह निगम व्यापक रूप से तरह–तरह की प्रवर्तन सेवाएं छोटे पैमाने के उद्योगों को प्रदान करता है। ये छोटे पैमाने के उद्योगों को मशीनरी, किराया–क्रय पद्धति और पट्टे पर भी दिलाते हैं। यह निगम छोटे पैमाने के उद्योगों के उत्पादों का निर्यात करने में सहायता करता है। यह छोटे पैमाने के उद्योगों को उनकी तकनीकों को विकसित करने और उच्चश्रेणीकृत करने और आधुनिकीकरण कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में सहायता करता है।

टिप्पणी

2. **राज्य लघु उद्योग विकास निगम (SSIDCs) :** हमारे देश के विभिन्न राज्यों में छोटे, अति लघु एवं ग्रामीण उद्योगों की विकास सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राज्य लघु उद्योग विकास निगमों की स्थापना की गई है। इनके प्रमुख कार्यों में दुर्लभ कच्चे माल की प्राप्ति और वितरण, किराया–क्रय पद्धति के आधार पर मशीनरी की पूर्ति, छोटे पैमाने के उद्योगों द्वारा उत्पादित उत्पादों के लिए विपणन सुविधाएं प्रदान करना सम्मिलित हैं।

3. **राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) :** कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए राष्ट्रीय बैंक की स्थापना सन् 1982 में ग्रामीण एवं कृषि क्षेत्रों के वित्तीयन के लिए शीर्ष संस्थान के रूप में की गई। यह बैंक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंकों द्वारा कृषि, छोटे पैमाने के कुटीर और ग्रामीण उद्योगों, हस्तशिल्प और ग्रामीण क्षेत्र की सहायक क्रियाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

4. **भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) :** भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की स्थापना सन् 1990 में प्रधान वित्तीय संस्थान के रूप में छोटे पैमाने के औद्योगिक उद्यमों के प्रवर्तन, वित्तीयन एवं विकास के लिए की गई थी। हमारे देश में छोटे पैमाने के उद्योगों को साख–सुविधा प्रदान करने वाले सभी बैंको की यह शीर्ष संस्था है।

5. **लघु उद्योग सेवा संस्थान (SISIs) :** लघु उद्योग सेवा संस्थानों की स्थापना छोटे उद्यमों को प्रशिक्षण एवं परामर्शदात्री सेवाएं प्रदान करने के लिए की गई है। ये संस्थान तकनीकी सहायता, सेवा एवं उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का संचालन करने में मदद करते हैं। ये छोटे पैमाने के उद्योगों को व्यापार एवं विपणन सूचना भी प्रदान करते हैं।

6. **जिला उद्योग केन्द्र (DICs) :** हमारे देश में छोटे (लघु) उद्योगों के प्रवर्तन के लिए जिला स्तर पर जिला उद्योग केन्द्रों की स्थापना की गई है। ये संसाधनों की उपलब्धता को दृष्टि में रखकर औद्योगिक सक्षमता का सर्वेक्षण (खोज़) करते हैं। इनका प्रमुख कार्य केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करना है। उद्यमियों द्वारा नई इकाईयों के स्थापित करने से सम्बन्धित प्रस्तावों की सार्थकता का मूल्यांकन कर कच्चे माल, मशीनरी व उपकरण के चयन के लिए उनका मार्ग दर्शन किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 8.4

1. लघु उद्योग सेवा संस्थानों द्वारा छोटे पैमाने के उद्योगों को प्रदत्त किन्हीं पांच सेवाओं को बताइए।

टिप्पणी

2. निम्नलिखित का पूर्ण रूप दिए गए स्थान में लिखिए।

(क) जि.उ.के. (डी.आई.सी.)

(ख) भा.ल.उ.वि.बै. (एस.आई.डी.बी.आई.)

(ग) रा.कृ.ए.ग्रा.वि.बै. (एन.ए.बी.ए.आर.डी.)

(घ) रा.ल.उ.नि.लि. (एन.एस.आई.सी.)

(ङ) ल.उ.से.सं. (एस.आई.एस.आई.)

आपने क्या सीखा

- कोई आर्थिक क्रिया जिसे एक व्यक्ति स्वयं लाभोत्पादक कार्य के रूप में करता है स्वरोज़गार कहलाती है। यह क्रिया, वस्तुओं के उत्पादन एवं विक्रय वस्तुओं के क्रय एवं विक्रय या मूल्य के लिए सेवा प्रदान करने की हो सकती है।
- स्वरोज़गार का महत्वः
  - छोटे व्यवसाय के लाभ
  - नौकरी के स्थान पर वरीयता
  - उद्यमिता की भावना का विकास
  - वैयक्तिक सेवाओं का प्रवर्तन
  - सृजनता का अवसर
  - बेरोजगारी की समस्या में कमी
  - उच्च–शिक्षा की सुविधाओं से वंचित लोगों के लिए वरदान
- स्वरोज़गार के क्षेत्र/अवसरः स्वरोज़गार में उचित जीवन–वृति चुनने से पहले प्रत्येक व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों जैसे व्यापार, विनिर्माण, पेशेवर धन्धों और वैयक्तिक सेवाओं के बारे में विचार करना चाहिए।
- व्यवसाय जिसका आकार छोटा हो, जिसमें कम पूँजी निवेश की आवश्यकता हो, जिसमें कम संख्या में कर्मचारी हों, जिनका उत्पादन कम मात्रा अथवा कम मूल्य का हो, छोटा व्यवसाय कहलाता है।
- छोटे व्यवसाय की विशेषताएंः ऐसे व्यवसाय का स्वामित्व व प्रबंध एक या कुछ व्यक्तियों के हाथ में होता है। व्यापार का स्वामी दिन प्रतिदिन के प्रबंध में सक्रिय भाग लेता है। साधारणतः छोटा व्यवसाय श्रम आधारित होता है एवं इसमें पूँजी की आवश्यकता कम होती है। इन इकाईयों में स्थानीय संसाधनों का उपयोग होता है एवं वे स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। छोटे व्यवसाय का परिचालन लोचपूर्ण होता है एवं जेस्टेशन अवधि कम होती है।

टिप्पणी

- भारत में छोटे व्यवसाय को प्लांट और मशीनरी में निवेशित स्थायी पूँजी के आधार पर (क) छोटे पैमाने के उद्योग, (ख) अति छोटे उद्योग, (ग) सहायक छोटे उद्योग, (घ) ग्रामीण उद्योग, (ङ) कुटीर उद्योग, (च) सूक्ष्म व्यावसायिक उद्यम (छ) छोटे पैमाने की सेवाएं और व्यवसाय (उद्योग सम्बन्धित) उद्यम तथा (ज) व्यापारिक इकाइयों में वर्गीकृत किया गया है।
- भारत में छोटे व्यवसाय का महत्वः छोटे पैमाने के व्यवसायों का विनिर्माणक क्षेत्र में कुल उत्पाद के सकल मूल्य का 35%, औद्योगिक क्षेत्र में कुल रोज़गार का 80%, एवं कुल निर्यात के 45% का योगदान है। ये रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं, इनमें पूँजी निवेश की आवश्यकता कम होती है, संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देते हैं, लोगों के रहन सहन के स्तर में सुधार करते हैं एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादों का निर्यात करते हैं।
- छोटे पैमाने के व्यवसाय का क्षेत्रः छोटे पैमाने के व्यवसाय का क्षेत्र विस्तृत है। इनमें स्थानीय क्षेत्र के लिए व्यापार, निजी सेवायें, वस्तुओं का उत्पादन एवं उनको उपलब्ध कराना सम्मिलित हैं।
- भारत की सरकार छोटे व्यावसायिक उद्यमों को अनेक प्रकार की सहायता प्रदान करती हैं। इनमें उदार साख नीति, पूँजी में परिदान (Subsidy) छोटे पैमाने के उद्योगों के वित्तीयन एवं विकास में SIDBI, NABARD और DICs के द्वारा सहायता, आदि सम्मिलित है। छोटे व्यावसायिक उद्यमों को सस्ते दर पर भूमि, शक्ति एवं पानी भी उपलब्ध कराया जाता है। सरकार ने देश में छोटे उद्योगों के सर्वांगीण विकास के लिए पृथक से एक मंत्रालय की स्थापना की है।
- सरकार छोटे उद्यमों के विभिन्न संगठनों जैसे NSIC, SSIDC, SIDBI, NABARD), SISI और DICs की स्थापना के द्वारा तकनीकी, वित्त, विपणन और प्रशिक्षण सहायता प्रदान करती है।

मुख्य शब्द

सहायक छोटे उद्योग	कुटीर उद्योग	जेस्टेशन अवधि
सूक्ष्म व्यवसाय	स्वरोज़गार	छोटे पैमाने के उद्योग
अति छोटे (नन्हें) उद्योग	ग्रामीण उद्योग	

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'स्वरोज़गार' शब्द का अर्थ क्या है?
2. छोटे व्यवसाय की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. अति छोटे उद्योग क्या हैं?
4. किन्हीं चार प्रकार के व्यावसायिक उद्यमों के नाम दीजिये जो छोटे पैमाने की सेवाएं एवं व्यावसायिक (उद्योगों से सम्बन्धित) उद्यमों में सम्मिलित होते हैं।
5. भारतवर्ष में पाये जाने वाले छोटे पैमाने के उद्योगों के कोई चार प्रकारों की गणना कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. स्वरोज़गार की कोई चार विशेषताएं बताइए।
7. स्वरोज़गार के किन्हीं दो अवसरों की व्याख्या कीजिए।
8. छोटे व्यवसाय की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
9. भारत में छोटे व्यवसाय को सहायता देने में SIDBI एवं SISI की भूमिका का वर्णन कीजिए।
10. व्यवसाय के कौन–से क्षेत्र हैं जिनमें छोटे पैमाने के व्यावसायिक उपक्रमों को स्थापित किया जा सकता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

11. स्वरोज़गार के महत्व के किन्हीं चार बिन्दुओं की व्याख्या कीजिए।
12. छोटे उद्योगों के किन्हीं चार प्रकारों का उल्लेख कर उनकी व्याख्या कीजिए।
13. भारतवर्ष में छोटे व्यवसाय को विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रदत्त सहायता का वर्णन कीजिए।
14. भारत सरकार द्वारा छोटे पैमाने के उद्योगों के विकास में दी जाने वाली किन्हीं छः सहायताओं का उल्लेख कीजिए।
15. भारत में छोटे व्यवसाय के महत्व का वर्णन कीजिए।
16. **कक्षा 12 उत्तीर्ण करने के पश्चात् अपूर्वा अपना स्वयं का विनिर्माण व्यवसाय आरम्भ करना चाहती हैं। उसके पिता ने उसे प्रारम्भिक वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति का भरोसा दिलाया है। उसे सलाह दी गई है कि कई सरकारी एजेन्सियां हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में सहायता प्रदान करती हैं तथा वह उनसे सम्पर्क साध सकती है। एजेन्सियों के नाम बताइए तथा छोटे व्यवसाय को प्रारम्भ करने के लिए वह किस प्रकार की सहायता प्रदान करती है, उल्लेख कीजिए।**

टिप्पणी

17. अमोघ के पिता एक नामी कम्पनी में बड़े पद पर कार्यरत हैं, लेकिन अमोघ देखता है कि उसके पिता सायं को दफ्तर से बहुत देर से आते हैं और पूरी तरह थके होते हैं। अधिकांश समय वह कार्य के बोझ के कारण चिन्ताग्रस्त रहते हैं। उसने फैसला किया कि जीवन में वह कभी नौकरी नहीं करेगा और अपना स्वयं व्यवसाय प्रारम्भ करेगा। उसे स्वरोजगार के विभिन्न क्षेत्रों के सम्बन्ध में बताइए जिससे कि वह प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक के लाभ एवं हानियों की तुलना कर सके।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1 2. हां–(ii) एवं (iv)

8.2 2. (क) विनिर्माणक (ख) व्यापारिक (ग) पेशेवर धन्धे
(घ) निजी/वैयक्तिक सेवाएँ (ङ) वैयक्तिक सेवाएँ

8.3 1. (क) व्यापारिक (ख) वैयक्तिक सेवाएँ (या अन्य कोई)

2. (क) अति छोटे उद्योग (ख) सूक्ष्म व्यावसायिक उद्यम
(ग) छोटे पैमाने के उद्योग
(घ) छोटे पैमाने की सेवाएँ एंव व्यवसाय (उदयोग से संबंधित) उद्यम
(ङ) ग्रामीण उद्योग

8.4 1. (क) परामर्श–दात्री (ख) प्रशिक्षण
(ग) तकनीकी सहायता सेवाएं (घ) उद्यमित्ता विकास कार्यक्रम
(ङ) व्यापार एवं विपणन सूचना प्रदान करना

2. (क) जिला उद्योग केन्द्र (ख) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक
(ग) राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक
(घ) राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड
(ङ) लघु उद्योग सेवा संस्थान

करें एवं सीखें

अपने आसपास के क्षेत्र के करीब 5 से 6 तक छोटी इकाइयों की जांच कर निम्न के बारे में विस्तृत अध्ययन करें।

(क) स्वरोज़गार के अवसर (ख) पूँजी निवेश (ग) छोटे व्यवसाय का प्रकार (घ) इन छोटे व्यवसायों को सरकारी सहायता। (ङ) इन इकाईयों के सम्मुख आ रही कठिनाईयां/समस्यायें आदि।

टिप्पणी

अभिनयन

रमेश एक मेधावी छात्र था जबकि उसका मित्र सुरेश एक साधारण छात्र था। लेकिन वे दोनों अच्छे मित्र थे। माध्यमिक कक्षा की पढ़ाई समाप्त करने के बाद रमेश पास के शहर में उच्च अध्ययन हेतु चला गया। अवकाश के समय जब रमेश अपने गांव आया तब उसने देखा कि सुरेश ने पढ़ाई छोड़ दी है एवं इधर उधर घूम रहा है। वह बहुत ही तनाव ग्रस्त था।

उनके मध्य वार्तालाप का सारांश नीचे दिया है।

रमेश : तुमको क्या हुआ है? तुम चिन्ता–ग्रस्त दिखते हो।

सुरेश : मैंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी है और मैं अब अपने माता–पिता पर बोझ नहीं बनना चाहता।

रमेश : तुम एक छोटा व्यवसाय क्यों नहीं शुरू करते ?

सुरेश : छोटा व्यवसाय! मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता।

रमेश : ठीक है, मेरे साथ चलो! मैं इसके बारे में तुम्हें विस्तार से बताऊंगा।

हमारे देश में छोटे व्यवसाय के अर्थ, विशेषताएं एवं क्षेत्र के बारे में रमेश ने सुरेश को समझाया। उसने छोटे व्यवसाय के विकास में सरकार एवं अन्य संस्थानों द्वारा दी जाने सहायताओं के बारे में भी समझाया।

अपने लिए एक भूमिका का एवं अपने एक मित्र के लिए दूसरी भूमिका का चयन कर वार्तालाप को जारी रखें।